शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

चित्रा मुद्गल की कहानियों में आधुनिकता बोध

प्रियंका वर्मा (शोधार्थी)
खरगोन, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

उत्तर आधुनिक युग में स्त्री के जीवन में व्यापक परिवर्तन हुए है। बदलते परिवेश में स्त्री परिवार के बीच पुरुष के प्रभुत्व को चुनौती देती हुई केंद्र में आने के लिए प्रयासरत है। इसमें उसे सफलता भी मिली है। किसी समय स्त्री का पुरुष को जवाब देना बेशर्मी माना जाता था, परन्तु अब इस स्थिति में बदलाव आ रहा है। आधुनिक कहानियों में यह बात प्रतिबिंबित हो रही है। कहानीकार चित्र मुद्गल ने सामाजिक परिवेश की सच्चाई को बयां करती कहानियां लिखी हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

युग की समकालीन समस्याओं का निरूपण समसामयिकता है एवं स्थापित मूल्यों का नवीनीकरण आधुनिकता है। आधुनिकता, युग विशेष का वह भाव है, जिसमें युग की समस्याएँ और समाधानों का चक्र घूमता रहता है एवं नये रास्तों का अन्वेषण होता रहता है। डॉ. नगेन्द्र के मतानुसार "आधुनिकता मध्य युगीन जीवन-दर्शन से भिन्न एक नया जीवन दर्शन और दृष्टिकोण है।"1 श्रीपतराय "आधुनिकता को एक अन्तदृष्टि मानते हैं।"2

"आधुनिकता केवल बाह्य वेष-भूषा, खान-पान, रहन-सहन अथवा सभ्यता के स्थूल रुपों की ही विशेषता नहीं उसकी जड़ें व्यक्ति के अन्तस्तल में रहती हैं। आधुनिक व्यक्ति की विचारधारा तार्किकता, दृष्टिकोण की वैज्ञानिकता, साहित्यिक एवं सामाजिक धारणाएँ सभी युग जीवन के यथार्थ पर आधारित होती है।"

सामान्यतः देखा जाए तो आधुनिकता व्यक्ति की मानसिकता को अपने परिवेश के अनुसार निरन्तर परिवर्तित करती हुई उन्मुक्तता की ओर अग्रसर होती है। आधुनिकता के कारण व्यक्ति की सोच संकुचित नहीं रहती एवं विचारों, संकल्पनाओं में गतिषीलता व सक्रियता आती है "जिसमें व्यक्ति, संकल्पनाओं में गतिशीलता व सक्रियता आती है"3 जिसमें व्यक्ति स्वातंत्र्य या खुला दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है एवं बौद्धिकता के द्वारा वह विश्लेषण प्रस्तुत करना चाहता है।

डॉ..कृष्णा अग्निहोत्री के अनुसार "आधुनिकता अपने समकालीन परिवेश के समानान्तर बोध की प्रक्रिया है जिसे जिज्ञासा निर्माण या बैद्धिक आलस्य में नहीं बांधा जा सकता है।" 4

इस प्रकार आधुनिकता के संदर्भ में कहा जा सकता है कि आधुनिकता मानव के प्रतिक्षण होने वाले परिवर्तन के प्रति आस्थावान रहकर ही जीवित रह सकती है।

हिन्दी जगत में कहानी का सूत्रपात भारतेंदु युग से माना जाता है। कालान्तर में नई कहानी का प्रादुर्भाव हुआ। प्रेमचंद के बाद हिन्दी कहानी को नवीन आयाम देने वालों में जैनेन्द्र प्रमुख हैं। उन्होंने कहानी को घटना के स्तर पर उठाकर चरित्र और मनोवैज्ञानिक सत्य पर लाने का

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रयास किया । कमलेश्वर लिखते हैं - नयी कहानी ने जीवन की सारी संगतियों -विसंगतियों जटिलताओं और दबावों को महसूस किया यानी नयी कहानी पहले और मूल रुप में जीवनानुभव है उसके बाद कहानी है।"5

कमलेश्वर, मोहनराकेश, राजेन्द्र यादव आदि ने आधुनिक कहानी को नये आयाम तक पहुँचाया जिनमें नये परिवेश की संवेदना, मनुष्य की अनुभूतियों और रिश्तों को निर्मम ढंग से प्रस्तुत किया गया है आधुनिक कहानियों में रिश्तों के बदले हुए स्वरूपों का परिदृश्य है।

कहानी के क्षेत्र में मनुभंडारी शानी, शैलेष मटियानी, रघुवीर सहाय आदि का योगदान भी है। रवीन्द्र कालिया, गंगाप्रसाद विमल और ज्ञानरंजन आदि के योगदान से आधुनिक कहानी में संवेदना जागृत हुई।

60 के दशक में ही कहानी लेखक का विशेष वर्ग उदित हुआ जिसे हम स्त्री लेखन कह सकते हैं। इस क्रम में उषा प्रियम्वदा, ममता कालिया, कृष्णा सोबती मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्गल आदि नाम उल्लेखनीय हैं। इन स्त्री कथाकारों ने अपनी कहानियों में नारी समस्याओं और आधुनिक समय के बदलते स्त्री-पुरुष के संबंधों को कहानी का विषय बनाया है। चित्रा मुद्गल कहानियों में भी हमें आधुनिक युग में व्याप्त समस्याओं व उनके समाधानों के जीवंत परिदृश्य मिलते हैं।

आधुनिता बोध

आधुनिक युग की अनेक समस्याओं को लेकर चित्राजी ने सर्वथा नये संदर्भ की खोज की है और जिन्दगी को व्यापक सामाजिक संदर्भ में रखकर मनुष्य के द्वन्द्वों और अर्तद्वन्द्वों का सही चित्रण किया है। उनकी कहानी 'केंचुल' में कमला शराब का धंधा करती है। पति के कापुरुष होने के कारण कमला को धंधा करने के लिए पराये पुरुषों के सामने सहायता की भीख मांगन पड़ती है। कमला अशिक्षित होते हुए भी व्यवहारिक है। जब वह बेटी के प्रेम सम्बन्ध को जान जाती है तब वह बेटी से कहती है, "भैया लोगों पर अपन को विश्वास नहीं...एक जोरन मुलुक में रखते, एक औरत इधर फंसाते, तू सरना का चक्कर छोड़ दे..।"

चित्राजी की कहानियों में स्त्री की कई कोणों से देखते हुए उसकी स्थिति पर विचार किया गया है स्त्री की स्थिति सामंती समाज में क्या है 'लकड़बग्घा' कहानी के माध्यम से कथाकार ने विचार प्रस्तुत किये हैं। कहानी में पंछाहवाली अपने हक के लिए अपने स्वर में बात करती है तो लंबरदार का गुस्सा सांतवे आसमान पर पहुँच जाता है वह विचार करता है कि बंटवारा मतलब 18 बीघा जमीन अपने हाथ से निकल जायेगी। कहानी में एक विधवा स्त्री का घर के शक्तिशाली इंसान से टकराने पर क्या नतीजा होता है इसका जीवंत उदाहरण है। कहानी के अंत में पता चलता है कि पंछाहवाली को लकड़बग्घा उठा ले गया "घर के भीतर से उठे मेहरियों के करूण रूदन ने पूरे गांव में डुग्गी पीट दी की पंछाहवाली को तड़के नाले पारवाले अरहीं के खेत से अचानक लकड़बग्घा उठा ले गया .....अध जगा गांव आंखे मलता हुआ लंबरदार के दरवाजे इकट्ठा होने लगा।"6 इस प्रकार अपने हक़ के लिए आवाज उठाने वाली पछाहवाली का गायब होना व उसका दुर्घटना में बदल जाना सामंतवादी समाज का दबदबा दर्शाता है।

'शून्य' कहानी में प्रेम की प्रगाढ़ता वैवाहिक जीवन की टूटन नारी शोषण आदि प्रस्तुत है। इस कहानी में बेला और राकेश एक दूसरे से प्रेम करते हैं। लेकिन दोनों की अलग-अलग शादी हो जाती है। राकेश की पत्नी सरला को उनके प्रेम

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संबंधों का पता था। राकेश ने घरवालों की समझाइश पर शादी कर ली लेकिन वह बेला से बाद में भी मिलता रहा। राकेश के घरवालों ने सोचा था कि शादी के बाद सब ठीक हो जायेगा। सरला की जीजी को एक खत भी मिलता है जिसमें राकेश के प्रेम संबंधों के बारे में लिखा था लेकिन जीजी जानबूझ कर पिताजी को खत के बारे में नहीं बताती। "जीजी ने यही सोचा होगा कुछ होगा भी तो शादी के बाद सब ठीक हो जाएगा। शायद बाबूजी ने भी शायद मांजी ने भी शायद सभी ने और वह लड़की न होकर प्रयोग हो गई।"7 सरला और राकेश के बीच रोज कलह बढने लगा। उधर बेला व उसके पति की भी आपस में नहीं बनती कहानी में आधुनिक युग के पति-पत्नी के संबंधों को प्रस्तुत किया है। स्त्री का दृष्टिकोण हमेशा समझौतावादी दृष्टिकोण होता है। इतना होने पर भी सरला राकेश से तालमेल बिठाने को तैयार है लेकिन राकेश बेला से शादी कर लेता है। इन सब से बौखलाई सरला अपने बेटे को मारने का सोचती है लेकिन माँ द्वारा समझाने पर वह फिर से बेटे के साथ जीना शुरु करती है। लेखिका ने एक औरत की मजबूरी का चित्रण किया है "एक तलाकशुदा औरत का निभाव समाज में सहज है। फिर जिसकी गोद में बच्चा टंगा हो, उसकी जिन्दगी में तो यूं ही सैकड़ों पूर्ण विराम लग जाते हैं। उसके जीने के सारे हक खत्म हो जाते है। चारों तरफ होती है संदिग्ध, लांछित करती निगाहे, सैकड़ों प्रश्नचिह्न..."8

पति के अभाव में उसके जीवन की शून्यता को बेटा भरता है लेकिन बेला और राकेश के जीवन में संतान के अभाव में शून्यता पैदा हुई उसे भरने के लिए राकेश सरला से अपने बेटे को छीन लेना चाहता है।

'हथियार' कहानी में चित्राजी ने पति-पत्नी के संबंधों में चल रही खींचतान के बीच पली-बड़ी बेटी की मानसिकता का वर्णन है एक और कहानी में पति-पत्नी के बीच तनाव व उनके टूटे हुए रिश्तों का परिदृश्य है तो दूसरी ओर बेटी इस माहौल में कहीं अपनी जमीन पाने की राह पर चल पड़ती है। वह अपने निर्णय स्वयं लेने की इच्छुक है। वह अपने पिता के साथ भी रहना नहीं चाहती वह अपने पिता से कहती है "मैं अब बालिग हो चूकी हूँ पा और अपने घर में रहना चाहती हूँ आपके पास ही वन रुम किचन लेकर।"9

कहानी 'जगदंबा बाबू गांव आ रहे है' में स्वार्थ से भरे चेहरों को बेनकाब करती है। कहानी में दिखावटी चेहरों का पर्दाफाश होता है। इसमें जन कल्याण के बहाने असहाय गरीब लोगों को दी गई सहायता छीन ली जाती है अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए जगदम्बा बाबू जैसे लोगों के द्वारा जनकल्याण के बहाने दी गई विकलांग बचैना को दी गई साइकिल वापस ले लेते है तथा सुमेरसिंह जैसे पिट्ठू हर गाँव में नाटक करने के लिए गाँव-गाँव फैले हैं। यहाँ स्वार्थ से भरे चेहरे बेनकाब होते हैं। सुमेरसिंह कहता है ... " जो गाड़ी ललौना को भेंट की गई वापस चाहिए।"10

"एकाध रोज में ललौना के लिए मजबूत बैसाखियाँ बनवा देंगे। वह आराम से चलफिर सके, यही हमारा उद्देश्य है।"11 स्वातंत्र्योत्तर भारत की ऐसी तस्वीर पर कम कथाकारों का ध्यान गया है। अपनी छवि बनाने के लिए बड़े-बड़े नेता कुछ भी करते है वे जानते है गरीबों की कोई नहीं सुनता।

निष्कर्ष

भारतीय समाज में जहां स्त्री हां में हाँ मिलाए वहाँ कोई टक्कर नहीं होती। जहां स्त्री अपनी राय याँ अपनी बात रखने लगती है वहाँ अनेक समस्याएं उठ खड़ी होती हैं। अपमान और अत्याचार सहन करने की भी एक सीमा होती है। जब पानी सर के ऊपर निकल जता है तो मूक स्त्री विद्रोह कर उठती है। चित्रा मुद्गल ने इसी विद्रोह को अपनी कहानियों में स्वर दिया है। इस प्रकार चित्रा मुद्गल ने आधुनिक युग के कई विषयों को उठाकर अपनी कहानियों के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाया है तथा कहानियों में आधुनिक संदर्भों का समावेष कर कहानियों के विकास में योगदान दिया।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. नयी समीक्षा नये संदर्भ, डॉ. नगेन्द्र पृ. 61

2. . समकालीन कहानी में नयी संवेदना - समकालीन कहानी दिशा और दृष्टि पृ.99

3. आधुनिक बोध और परम्परा-डॉ..लालता प्रसाद सक्सेना पृ. 2

4. स्वतंत्रयोत्तर हिन्दी कहानी, डॉ..कृष्णा अग्निहोत्री-पृ. 133

5. (समकालीन हिन्दी कहानी आर.एम.वाठेर) समकालीन हिन्दी साहित्य विविध परिप्रेक्ष्य-एन.आर. परमार पृ.135

6. लकड़बग्घा-आदि-अनादि, चित्रा मुद्गल-पृ. 35

7. शून्य - आदि-अनादि, चित्रा मुद्गल-पृ.128

8.शून्य - आदि-अनादि-चित्रा मुद्गल- पृ.128

9 हथियार, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ 172

10 जगदंबा बाबू गांव आ रहे है, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ 168

11 जगदंबा बाबू गांव आ रहे है, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ 168